हरिश्चंद्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय वाराणसी

परास्नातक (राजनीति विज्ञान)

(तृतीय सेमेस्टर)

नवम प्रश्न पत्र

(आधुनिक राजनीतिक चिंतन)

डॉ. पंकज कुमार सिंह

राजनीति विज्ञान विभाग

विभागाध्यक्ष & एसोसिएट प्रोफेसर

जॉन स्टूअर्ट मिल

(John Stuart Mill)

(ब्रिटिश राजनीतिक विचारक)

मिल द्वारा बेंथम के उपयोगितावाद में संशोधन

19वीं शताब्दी में ब्रिटेन के उदारवादी व उपयोगितावादी विचारको में जॉन स्टूअर्ट मिल का स्थान सबसे ऊंचा है। उसने अपने पिता जेम्स मिल तथा अपने वैचारिक गुरु जर्मी बेंथम के इच्छानुसार एक सशक्त उपयोगितावादी प्रचारक के रूप में अपना सार्वजनिक और वैचारिक जीवन प्रारंभ किया। **मिल** ने स्पष्ट रूप से यह स्वीकार किया है कि ," *मुझे उपयोगितावाद में एक धर्म, एक दर्शन, एक विश्वास मिला है।*" **मुरे** के शब्दों में, **"** *मिल पर अपने पिता व बेंथम का प्रभाव इतना अधिक मालूम होता है, जैसे वह कभी पैदा ही नहीं हुआ हो* **"** मिल ने **"*उपयोगितावाद सोसाइटी*"** की स्थापना की और **"लंदन रिव्यू"** तथा **"वेस्ट मिनिस्टर रिव्यू"** का संपादन भी किया। मिल ने सन 1823 से 1858 तक ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए कार्य भी किया।

कालांतर में परिस्थितियों से प्राप्त स्व-अनुभवों तथा डार्विन, स्पेंसर, और काम्टे के विचारों तथा वर्ड्सवर्थ और कॉलरिज के काव्यों से उसके विचारधारा में बदलाव आया । फलस्वरूप मिल ने उपयोगितावाद को समय अनुकूल बनाने के विचार से **"उपयोगितावाद" (Utilitarianism) 1863** नामक अपनी पुस्तक में उपयोगितावाद की पुनः व्याख्या करके, उसे नवीन रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। मिल ने बेंथम द्वारा प्रतिपादित उपयोगितावाद को भौतिकता की सीमा से बाहर निकालकर उसे नैतिकता से जोडा। इसलिए उसे **"संशोधित उपयोगितावादी"** भी कहा जाता है।

डायल फिलिस के शब्दों में, *" व्यक्तिगत प्रवृत्ति और नवीन राजनीतिक परिस्थितियों ने मिल को उपयोगितावादी दर्शन का एक नए आधार पर नव निर्माण करने के लिए बाध्य होना पड़ा "*

उपयोगितावाद का अर्थ

मिल के लिए उपयोगितावाद का अर्थ, बेंथम के अर्थ के समान है। वह बेंथम के सुखवाद(Hedonism) की धारणा को स्वीकार करता है और सुख की प्राप्ति तथा दुख से मुक्ति को मानव जीवन का एकमात्र अभीष्ट लक्ष्य मांनता है। **मिल** के अनुसार, *" सभी कार्य उस अनुपात में ठीक हैं जिस अनुपात में वे सुख की वृद्धि करते हैं और उस अनुपात में गलत हैं जिस अनुपात में वे सुख के विपरीत हैं। सुख का अभिप्राय आनंद की प्राप्ति और दुख का अभाव है। "*

बेंथम के उपयोगितावाद में मिल द्वारा संशोधन

(Mill's alteration in Bentham's Utilitarianism)

मिल ने जिन संशोधनों द्वारा बेंथम के उपयोगितावाद में परिवर्तन किया है उनका उल्लेख निम्नलिखित रुप से किया जा सकता है :--

1. **मिल का मनुष्य परमार्थी (Selfless) है।**

बेंथम की उपयोगितावादी विचारधारा के अनुसार मनुष्य एक स्वार्थी प्राणी है। वह केवल अपना सुख चाहता है। वह स्व केंद्रित है। वह दूसरों के सुख दुख को नहीं समझता है। इसके विपरीत मिल ने मनुष्य को परमार्थी बताया है। मनुष्य दूसरों के सुख को अपने जीवन का लक्ष्य मानता है और दूसरों के सुख में अपना सुख देखता है। **मिल** के शब्दों में, *" जो मनुष्य स्वयं के सुख के स्थान पर अन्य के सुख पर केंद्रित है वही मनुष्य सुखी है"*

2. **मानव के सुख और दुख में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों विभेद होते हैं।**

बेंथम के शब्दों में, *"पुष्पीन नामक खेल और कविता पाठ के आनंद का गुणात्मक स्वरूप एक सा है दोनों में केवल मात्रात्मक अंतर होता है।"*

मिल ने बेंथम के इस मान्यता का खंडन करते हुए लिखा है कि सुख और दुख में मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों अंतर पाया जाता है। **मिल** के शब्दों में, *" कुछ प्रकार के सुख, अन्य प्रकार के सुखों से अधिक गुणात्मक होते हैं इसलिए सुख के मूल्यांकन का केवल मात्रात्मक आधार एक मूर्खतापूर्ण बात होगी "* अतः मिल के अनुसार कविता पाठ से प्राप्त सुख पुष्पीन के खेल से प्राप्त सुख से उच्च और श्रेष्ठ हैं। **मिल** शब्दों में , *"एक संतुष्ट सूअर होने की अपेक्षा एक असंतुष्ट मनुष्य होना*

कहीं अधिक श्रेष्ठ है। एक संतुष्ट मूर्ख बने रहने की अपेक्षा एक असंतुष्ट सुकरात होना अधिक श्रेष्ठ है।"

मिल का अभिप्राय है कि संतुष्ट मूर्ख और संतुष्ट सूअर केवल अपना ही स्वार्थ और सुख जानते हैं परंतु एक असंतुष्ट मनुष्य और सुकरात इसलिए श्रेष्ठ है क्योंकि वह दूसरों के पक्ष व दुख को भी जानते हैं।

3. सुखमापक गणना विधि असंगत है। (Hedonistic Calculus Absurd) बेंथम विभिन्न सुखों के केवल मात्रात्मक अंतर को स्वीकार करता है इसलिए उसकी धारणा है कि विभिन्न प्रकार के सुखों की मात्रा को मापा जा सकता है इसके लिए उसने सुख मापक गणना विधि को प्रस्तावित किया है।

लेकिन मिल ने प्रत्येक प्रकार के सुख के मात्रात्मक के साथ-साथ गुणात्मक अंतर को भी माना है इसलिए सुख मापक गणना विधि को असंगत बताया है। मिल के अनुसार सुख और दुख को किसी भी कीमत पर मापा नहीं जा सकता। सुखों का वस्तुतः माप संभव नहीं है। किसी के सुख के और दुख के बारे में वही बता सकता है जिसने उसका स्वयं अनुभव किया है।

4. **मिल का उपयोगितावाद नैतिक है,राजनीतिक नहीं (Mill's Utilitarianism is Ethical, not Political) बेंथम** ने अपनी उपयोगितावाद में राजनीतिक तत्व को अधिक महत्व प्रदान किया है। बेंथम के अनुसार शासक को नीतियों, कानूनों के निर्माण में व्यक्तियों के अधिकतम सुख के सिद्धांत का प्रयोग करना चाहिए। यदि शासक व्यक्तियों के सुख के मात्रात्मक अंतर को ध्यान में रखकर शासन कार्य करेगा तो इससे अधिकतम व्यक्तियों को अधिकतम सुख प्राप्त हो सकेगा।

मिल के अनुसार शासकीय राज्य का लक्ष्य केवल नागरिकों के सुखों में वृद्धि करना ही नहीं है वरन उनके नैतिक गुणों का विकास करना भी है। प्रत्येक व्यक्ति का सुख अलग अलग होता है इसलिए वह अपने सुख को अधिक महत्वपूर्ण समझता हैं, फलस्वरूप उनके

सुखों में संघर्ष होना अनिवार्य है। इसलिए सुखों के मात्रात्मक अंतर पर ध्यान देकर अधिकतम सुख की प्राप्ति असंभव है। अधिकतम सुख तभी प्राप्त हो सकेगा जब प्रत्येक व्यक्ति दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा अपने साथ स्वयं चाहता है।

5. **सुख और दुख व्यक्ति के आंतरिक स्रोत से उत्पन्न होते हैं**।

बेंथम में सुख और दुख के चार प्रमुख स्रोतों का उल्लेख किया है। मिल ने इसकी कटु आलोचना की है मिल के अनुसार बेंथम का सुख और दुख वाह्य वस्तु है।मिल सुख और दुख को मानव का आंतरिक वस्तु मानता है मानव का अंतः करण सुख और दुख का अनुभव करता है जो कार्य अच्छा या बुरा होगा उससे अंतःकरण को सुख या दुख प्राप्त होगा। महान व्यक्ति आंतरिक सुख की प्राप्ति के लिए महान बलिदान दिए हैं जबकि उनको अनेक शारीरिक कष्टों का अनुभव प्राप्त हुआ।

6. उपयोगितावाद सार्वभौमिक नहीं है।

बेंथम ने उपयोगितावाद सिद्धांत को सार्वभौमिक माना है अर्थात प्रत्येक काल, समय, देश, परिस्थिति में मनुष्य सुख की अनुभूति करना चाहता है। परंतु बेंथम के इस विचार का मिल खंडन करता है। कुछ समाज एवं राज्य इतिहास एवं परंपरा के भिन्नता और महत्व को भी ध्यान में रखते हैं।

7. **शारीरिक आनंद व सुख से बौद्धिक सुख उत्कृष्ट है** ।

मिल ने बेंथम के विपरीत सुखों के गुणात्मक अंतर को महत्वपूर्ण माना है। बौद्धिक आनंद से प्राप्त सुख का गुण व महत्त्व शारीरिक आनंद से प्राप्त गुण से अच्छा एवं श्रेष्ठ होगा ।

8. **स्वतंत्रता उपयोगिता की अग्रगामी है**।

मिल ने स्वतंत्रता के उपभोग से प्राप्त सुख को उपयोगिता से श्रेष्ठ माना है। स्वतंत्रता उपयोगिता की अनुगामिनी नहीं है। मिल के अनुसार अल्पसंख्यकों की इच्छा को बहुसंख्यक के सुख से दमित नहीं किया जा सकता। **मिल** के अनुसार, *" ऐसा क्षेत्र जहां व्यक्ति का मात्र अपने से सरोकार है, वहां अधिकार के रूप में उसकी स्वतंत्रता परम है।"*

आलोचना :--

1. **गुणात्मक सुख अस्पष्ट** ।

मिल ने शारीरिक और मानसिक तथा उच्च और निम्न सुखो में अंतर बताया है।परंतु इस अंतर को मापने के लिए कोई मापदंड निर्धारित नहीं की है ।

2. **अधिकारों की अवहेलना।**

मिले अपनी उपयोगितावादी सिद्धांत में स्वतंत्रता का समावेश करके उसे उत्कृष्ट बनाने का प्रयास किया है परंतु मानवीय अधिकारों को कोई महत्व नहीं दिया है।

मैक्सी के शब्दों में, *" मिल की उपयोगितावाद की समीक्षा में बेंथम का अंश अत्यधिक कम रह गया है। "*

सी. एल. वेपर के अनुसार, *" मिल उपयोगितावाद को आलोचनाओं से बचाने के लिए संपूर्ण उपयोगितावाद को ही पलट दिया है "।*

मूरे के शब्दों में, *" मिल का उपयोगिता सिद्धांत ,बेंथम के सिद्धांत में कोई महत्वपूर्ण तथ्य नहीं जुड़ता, बल्कि इस सिद्धांत के अर्थ व महत्व को अत्यधिक धूमिल कर देता है। "*

निष्कर्ष

मिल ने बेंथम के उपयोगितावाद की कठोरता और एकरूपता को उदार और मानवीय बनाने का प्रयास किया है। बेंथम के मृतप्राय हो चुके उपयोगिता सिद्धांत में संशोधन करके कर उसमें नव जीवन का संचार भरने का प्रयास किया है ,ऐसा करते समय वह बेंथम के उपयोगितावाद से अधिक दूर हट गया। जिससे मिल को उतनी सफलता प्राप्त ना हो सकी जितनी उसे अन्य सिद्धांतों और विचारों में प्राप्त हुआ।